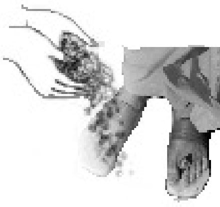

।। वेदान्त पीयूष ।।

मुख्य पृष्ठ | उपदेश सार | उपासना | सामान्य | मिशन समाचार

Postal Regd No : IDC/MP/966/2006-08 Indore
मूल्य - रु १०/-, वर्ष -६ अंक-७८
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६
जुलाई-२००८

यदज्ञानतो भाति विश्वं समस्तं विनष्टं च सद्यो यदात्मप्रबोधे।
मनोवागतीतं विशुद्धं विमुक्तं परं ब्रह्म नित्यं तदेवाहमस्मि।।

जिसके अज्ञान से यह समस्त विश्वरूप प्रपंच भासित होता है, तथा आत्मा को जान लेने पर यह समस्त नष्ट हो जाता है, वह मन-वाणी से परे विशुद्ध, विमुक्त, परं, नित्य ब्रह्मतत्त्व मैं ही हूं।

जीवन के महान लक्ष्य की सिद्धि तथा व्यक्तित्व के सर्वांगिण विकास के लिए शास्त्र जीवन में कर्म और उपासना के समावेश का विशेष महत्व बताता है। व्यक्ति को कर्म का तरीका समझ कर उसे शास्त्र के द्वारा प्रदत्त यज्ञभाव का कर्म में समावेश करते हुए कर्म करना चाहिए। ऐसे कर्म को ही कर्मयोग कहा जाता है। कर्म के साथ-साथ उपासना का भी अनुष्ठान करना चाहिए।

उपासना जीवन में एक ऐसा लक्ष्य होता है जिससे हम जीवन में प्रेरित होते हैं। वह लक्ष्य जो मन को प्रसन्न करता हो, मन को गद्‌गद करने वाला हो तथा मन की शून्यता को खत्म करने वाला हो। जिसका स्मरण करते हुए समय का भी भान न रहे - ऐसी वस्तु की तरफ उपासना में ध्यान केन्द्रित करा जाता है। उपासना के माध्यम से जीवन में आदर्श की स्थापना होती है। चित्त में इह जन्म तथा जन्मान्तर के भावना और संस्कार भी होते हैं, जो समय समय पर अपना सिर उठाते हैं। वह लक्ष्य के विपरीत भी घसीट के ले जाने में सक्षम होते हैं। इसके प्रभाव का सामना करना पडता है, लेकिन उसके लिए उपासना ही एक मात्र समाधान है। बैठकर लक्ष्य का स्मरण हो, हृदय गदगद हो जाए, शरीर रोमांचित हो जाए, ऐसी प्रेरणा होना ही उपासना का सार है। उपासना में ध्यान ध्येय वस्तु की तरफ मोड़ कर सजातीय वृत्ति प्रवाह का अभ्यास किया जाता है। जिसमें हम मात्र एक ही चीज में रमते हैं। इसी से ही मन के दूसरे लक्ष्यों दूर हो जाते हैं। वासना का शिथीलीकरण भी उपासना के माध्यम से होता है। मन को जिस समय बाह्य विषयों की असारता को जानकर उनसे हटाया जाए तो मन में शून्यता होने लगती है और मन कभी भी शून्य नहीं रह सकता है अन्यथा जड़ता व तमस को प्राप्त करता है। अतः ऐसे महान लक्ष्य के प्रति प्रेम से मन जब एक जगह रमने लगता है तो मन की शून्यता को भरने के लिए अन्य कोई विचार नहीं आते हैं। मन में शून्यता को भरने के लिए ही अन्य चीजें मन में आती हैं। मन में इच्छाएं, वासनाएं तब ही आती हैं जब मन में कोई शून्यता रही हो। तब ही काम, क्रोध विकारादि आते हैं। मन खोखलेपन से युक्त होता हो तब मन को भरने के लिए किसी अन्य विषय का आश्रय लिया जाता है।

उपासना

शास्त्रविहित समस्त कर्म तथा नियम का आधार उपासना है। काम्यादि त्याग, नित्यादि अनुष्ठान आदि किसी से प्रेरित होने पर ही हो पाता है। दिव्य परमात्मा के लक्ष्य से प्रेरित उसे इसमें विवेक दिखाई पड़ता है। उपासना से जनित भावना ही हमारे कर्म में प्रतिबिंबित होती है। जो नित्यादि कर्म करता है वह उपासना अच्छी तरह से कर पाता है और उपासना जो करता है वह नित्यादि कर्म कर पाता है। ये उपासना और कर्म अन्योन्य पूरक हैं। कर्म भावना की अभिव्यक्ति का माध्यम है और उपासना में यह भावना को जगाई और दृढ़ की जाती है। उपासना से कर्म के क्षेत्र के समस्त तनाव समाप्त होने लगते हैं। उपासना ईश्वर की बरसती कृपा को देखना है। ऐसा व्यक्ति धन्यता से युक्त होकर जीने लगता है। उपासना में प्रभु की बरसती कृपा को देखकर धन्य होकर स्थित रहना चाहिए। उस धन्यता की वजह से विचार शून्यता हो जाए।

कर्मयोग जहां तटस्थता लाता है, तो उपासना कहीं पर प्रेमपूर्वक तल्लीन होने का सामर्थ्य जगाती है। अर्थात् मन का सर्वांगिण विकास कर्म और उपासना के समुच्चय से होता है। तटस्थता श्रवण के लिए आवश्यक तथा तल्लीनता निदिध्यासन रूप साधना के लिए आवश्यक है। जो भी इन दोनों साधनों को अच्छी तरह से कर पाता है वह ही ज्ञान प्राप्त करके उसमें निष्ठ हो जाता है।

अमीर वह होता है, जिसे ज्यादा वस्तुओं की आवश्यकता ही नहीं।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009

पिछले श्लोक में महर्षिजी ने बताया कि अहं के बाधित होने पर 'मैं' की तरह से स्थित एक अलय सत्ता ही अवशिष्ट रहती है। यह ही सत्य है। अब इस सीमित व काल्पनिक 'मैं' के उपर से अध्यारोप का अपवाद करने का तरीका आगे के श्लोक में बता रहे हैं।

> विग्रहेन्द्रिय प्राणधीतमः।
> नाहमेकसत् तज्जडं ह्यसत्॥

(22)

हम यह शरीर रूप विग्रह नहीं हैं, न हम इन्द्रियां हैं, न प्राण, बुद्धि और अंधकार स्वरूप हैं। किन्तु हम एक सत् स्वरूप हैं। यह प्राणादि तो जड़ और असत् रूप हैं।

उपदेश सार

जहां पर भी अज्ञान होता है, वहां विपरीत भावनाएं होना स्वाभाविक होती हैं। हमने अपने स्वरूप को नहीं जानने के कारण अपने बारे में विविध प्रकार की कल्पना की हैं, जैसे रस्सी में सांप की कल्पना होती है। अतः सत्य को जानने के लिए अध्यारोप को अध्यारोप की तरह जानना होगा। उसके बाद ही शास्त्र प्रमाण से सत्य का निश्चय हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि हमने अपने बारे में जो कुछ भी मान्यता रखी हैं उनके बारे में पुनर्विचार किया जाए।

हमारी विपरीत धारणाओं में सर्वप्रथम अपने स्थूल शरीर को 'मैं' मान लिया जाता है। यह स्थूल शरीर दृश्य है, नाशवान है, अतः जड़ है। यह हम कैसे हो सकते हैं? यह स्थूल शरीर हम नहीं है। इसी प्रकार इन्द्रियां और प्राण भी हम नहीं हैं। हमारी इन्द्रियों और प्राणों में सतत परिवर्तन होता है। जिसमें भी विकार होता है वह तो मिथ्या होता है। इन समस्त परिवर्तन को हम जानते हैं, हम उनके दृष्टा हैं, यह सब हमारे लिए दृश्य रूप है। दृश्य होने की वजह से यह सब जड़ है। हम एक है और यह इन्द्रियां दस और प्राण पांच हैं। अतः यह भी हम नहीं हो सकते। हम अपने मन व बुद्धि के भी दृष्टा हैं। यह हमारे लिए दृश्य व परिवर्तनशील है। इसे हम जानते हैं। समस्त उपाधियां पंचमहाभूत की ही बनी हुई हैं, एवं किसी भी दृष्टि से विचार करें ता उनकी जड़ स्वरूपता सिद्ध होती है।

इस प्रकार से विचार करते हुए यह निश्चय करें कि समस्त उपाधियां जड़ स्वरूप एवं विकारी हैं। वे दृश्य हैं, अतः ये सब हम नहीं हैं। जिस समय यह निश्चय करते हैं कि ये उपाधियां जो कि परिवर्तन के दायरे में ही स्थित हैं, हम नहीं हैं। उपाधियों के अन्तर्गत हो रहे परिवर्तन से मन में हर्ष और शोक का अभाव होना चाहिए। इन उपाधियों में आत्मबुद्धि होने पर ही उनमें हो रहे परिवर्तनादि से तथा उनके लिए निर्मित अनुकुलता-प्रतिकुलता पर ही सुख व दुःख आश्रित हो जाता है। एवं यह हम नहीं है इस प्रकार निश्चय विचारपूर्वक करना चाहिए। हम इन सब को व्याप्त करने वाले एक, अविकारी चेतन सत्ता है, यह निश्चय करना चाहिए।

संसार से मुक्त होने के दो प्रचलित तरीके देखे जाते हैं। एक संसार का तरीका है जो कुछ भी त्याग बगैर बाहरी कुछ न कुछ प्राप्त करने के द्वारा तृप्त होना चाहता है। जिसमें विषय भोग की ही प्रधानता है। ज्यादातर लोग जगत में इसी धरातल पर प्रयास करते हुए देखे जाते हैं। दूसरा तरीका जिसमें सब कुछ छोड़ दिया जाता है, शून्यता में अथवा निर्विचार व निष्क्रियता का आश्रय लिया जाता है। जो इस तरीके का आश्रय लेता है, वह पलायनवादी है, जो संसार से भागना चाहता है। यह भी अज्ञानी होता है। वह जीवभाव को नहीं त्यागता किन्तु अप्रतीति को ही त्याग समझता है। कुछ उपलब्धि करे या शून्य हो जाए इन दोनों में जीव का अस्तित्व ग्रहीता अथवा त्यागी के रूप में बना रहता है। ये दोनों ही अहं केन्द्रित प्रतिक्रियाएं होती हैं।

अतः साधना का श्रीगणेश किसी महान सत्ता के हाथों में निमित्त बनकर जिया जाता है। जैसे-जैसे ईश्वर रूप महान सत्ता के प्रति जाग्रत होते हुए उनके प्रति धन्यता से अपने कर्मों को सेवा के रूप में समर्पित करते हैं, वैसे-वैसे अहं का निरास होता जाता है। वहां न कुछ पकड़ने की चेष्टा होती है और न ही कुछ छोड़ने की चेष्टा, क्योंकि पकड़ने और छोड़ने वाले की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है, वह तो अपने आपको किसी के हाथों में निमित्त मात्र देख रहा है। ऐसी धन्यता से युक्त सात्विक मन समस्त अपेक्षाओं से रहित होता जाता है, तथा इस जीव पर विचार करते हुए जीवभाव के मिथ्यात्व का निश्चय कर मुक्त हो जाता है।

महान व्यक्ति वो नहीं हैं जिसने ज्यादा प्राप्त किया॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुं सुरभूप।।

***हे** पवन तनय हनुमानजी! आप समस्त संकट का हरन करने वाले मंगल स्वरूप हैं। हे देवताओं के स्वामी! आप हमारे हृदय में श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजी के सहित आकर निवास कीजिए।*

अंत में गोस्वामीजी हनुमानजी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि आप संकट को हरने वाले हैं, आपका रूप मंगलकारी है।

हनुमानजी वेदोक्त प्राण की दिव्य अभिव्यक्ति रूप हैं। वे पवनदेवता के पुत्र हैं। उन्हें समस्त देवताओं के आशीर्वाद प्राप्त होने से सभी देवताओं की शक्ति व सामर्थ्य प्राप्त है। इसके उपरान्त भी निरभिमानी, उदात्त व विवेकी हैं, तथा प्रभु के परं भक्त हैं। ऐसे हनुमानजी का दर्शन मात्र ही मंगलमय है। हनुमानजी समस्त संकटों को हरने वाले हैं। अपने आपको सीमित व्यक्ति समझने के उपरान्त इसी व्यक्तित्व के स्तर पर जीना मात्र ही संकट रूप होता है। हनुमानजी का स्मरण इस व्यक्तित्व से उपर उठ़कर जीने की प्रेरणा देता है।

हनुमान चालीसा

जो स्वयं प्रभु के चरणों में निष्काम भक्ति व सेवा से युक्त होकर समर्पित है। जैसे-जैसे जीवन में निष्कामता का समापवेश होता जाता है, वैसे वैसे मन सात्विक और निर्मल होता जाता है। ऐसे मन में स्वस्वरूप के ज्ञान की प्राप्ति के द्वार खुल जाते हैं। अपनी पूर्ण स्वरूपता में जागृति ही मंगलरूपा है। हनुमानजी स्वयं उस ज्ञान में रम रहे हैं। जीवभाव को धारण करके प्रभु के चरणों के भक्त होने की भूमिका निभाते हुए अपनी सेवा को व्यक्त करते हैं।

गोस्वामीजी हनुमानजी को अपने हृदय में श्रीराम, लक्ष्मणणी और सीताजी के समेत आकर वास करने की प्रार्थना करते हैं। प्रभु श्रीराम ज्ञान के प्रतीक हैं, लक्ष्मणजी वैराग्य के तथा सीताजी भक्ति की प्रतीक हैं। हनुमानजी प्रभु सेवा के अप्रतिम आदर्श रूप हैं। प्रभु के श्रीचरणों की सेवा के लिए हमारी सीमित अस्मिता रूप जीवभाव जो कि अज्ञान की वजह से संसार के विषयों के साथ राग-द्वेष से जुड़ा हुआ है। अतः हमें ज्ञान और वैराग्य की आवश्यकता है, जिससे कि हम इससे उपर उठ़ सके और हनुमानजी की तरह ही प्रभु की सेवा में समर्पित हो सकें। प्रभु के प्रति भक्ति के अभाव में न हम उनका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, और न ही वैराग्य की सिद्धि हो सकती है। अतः आप ही हमारे हृदय में श्रीराम, लक्ष्मणजी और सीताजी समेत वास कीजिए। जिससे कि हम आप ही की तरह प्रभु के अनन्य भक्त होकर सेवा में समर्पित हो सकें।

प्रभु श्रीराम को एक दिन युवराज-पद देने की धोषणा की गई, परन्तु दूसरे ही दिन उन्हें वन जाने का आदेश मिल गया। इस प्रकार व्यक्ति को राज्य मिलते-मिलते यदि श्रीराम की ही परिस्थिति का सामना करना पड़े, तो वह पीड़ा से आहत होगा, निराश व दुःखी होगा। ऐसी परिस्थिति में भी श्रीराम मुस्कुराते हुए वन चले जाते हैं। इसका एक यह भी कारण है कि वे ऐश्वर्य को बड़प्पन का चिहृन नहीं मानते हैं। श्रीराम का चरित्र ही उनका ऐश्वर्य है। वे ऐश्वर्य के पीदे नहीं चलते, किन्तु ऐश्वर्य उनका वरण करने के लिए व्यग्र रहता है। इसलिए वन-पथ में ही श्रीराम के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले अनेक पात्र दिखाई देते हैं। किन्तु भगवान ने उन्हें ग्रहण करने के स्थान पर त्याग का ही जीवन स्वीकार किया। उनके सम्पर्क में आकर ही सुग्रीव राज्य प्राप्त करते हैं, विभीषण लंकेश्र बन जाते हैं। अतः विभूति का सच्चा सदुपयोग तो दूसरों के अभाव को दूर करने में ही है।

बुरे आदमी का रोष पत्थर की रेखा होता है, मध्यम कोटि के व्यक्तियों का रोष बालू पर पड़ी रेखा के समान तथा महात्मा का रोष पानी की लकीर की भांति होता है। किन्तु प्रेम में उससे विपरीत होता है। सत्पुरुषों का प्रेम पत्थर की रेखा, मध्यम कोटि के व्यक्तियों का प्रेम बालू की लकीर तथा निकृष्ट के लोगों का प्रेम जल की रेखा के समान होता है।

मेरा दिल समन्दर है, जिसमें वक्त की लहरें उठ़ती हैं
बीते वक्त को बहा ले जाती हैं।
इसलिए मैं हर पल को जीने का मजा जानता हूं।
इसलिए मैं सब को अपने में समाना जानता हूं।
मेरा दिल समन्दर है, इसमें बड़ी गहराईयां है।
इसलिए हर खयाल एक नया मोती लाता है।
जो जिन्दगी को और भी खूबसूरत बनाता है।

महान व्यक्ति वह है, जिसने संसार को तुच्छ समझ कर छोड़ दिया।

वेदान्त आश्रम, इन्दौर :– वेदान्त आश्रम, इन्दौर में प्रतिदिन पूज्य गुरुजी के द्वारा अध्यापित लक्ष्मीधर कवि कृत 'अद्वैत मकरंद' ग्रंथ का समापन हुआ। अब प्रातः के सत्र में स्वामी सदानन्दजी द्वारा रचित 'वेदान्त सार' पर प्रवचन चल रहे हैं। इस ग्रंथ के प्रतिदिन के प्रवचन इण्टरनेट पर वेदान्त मिशन के ब्लाग http://vmissionews.blogspot.com/ पर से डाउन लोड़ करके सुन सकते हैं। प्रतिदिन १०.३० बजे पूज्य स्वामिनि अमितानन्दजी के श्रीमद् भगवद्गीता पर प्रवचन चल रहे हैं। इस समय गीता के चौथा अध्याय पर प्रवचन चल रहे हैं। आश्रम में २१ से २६ मई तक प्रातः भगवान आदि शंकराचार्य द्वारा रचित गीता भाष्य के तेरहवें अध्याय के दूसरे श्लोक पर की भाष्य विषयक चर्चा सम्पन्न हुई।

‖ मिशन समाचार ‖

पू. स्वामिनी समतानन्दजी गीता ज्ञान प्रसार हेतु लन्दन विदेश यात्रा के लिए ३० मई को इन्दौर से रवाना हुई। यू.के. में विविध स्थानों में उनके गीता पर प्रवचन आयोजित हो रहे हैं।

प्रतिदिन प्रातः तथा सायं ७.१५ बजे भगवान श्री गंगेश्वर महादेवजी की आरती होती है। प्रति सोमवार को गंगेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक किया जाता है।

वेदान्त मिशन, मुम्बई:– वेदान्त मिशन, मुम्बई द्वारा पू. गुरुजी के गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन दि. २१ से २५ मई तक खार में स्थित नेशनल कालेज के हाल में किया गया। इस यज्ञ के सायं के सत्र में पूज्य गुरुजी ने गीता के पंद्रहवें अध्याय पुरुषोत्तम् योग पर तथा प्रातः के सत्र में मुण्डक उपनिषद के दूसरे अध्याय के दूसरे खण्ड़ पर व्याख्या की गई।

गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम

इस वर्ष गुरु पूर्णिमा १८ जुलाई को आ रही है। इस पर्व निमित्त गुरु पूर्णिमा के पूर्व १३ से १७ जुलाई तक वेदान्त आश्रम में एक साधना शिबिर का आयोजन किया गया है। इस शिबिर में गुरु स्तोत्रम् तथा मानस में स्थित गुरु गीता पर प्रवचन होंगे, उसके अलावा ध्यान परिचर्चाएं, भजन एवं प्रश्नोत्तर आदि भी होंगे।

गुरुपूर्णिमा के दिन १८ जुलाई को प्रातः ६.०० बजे पूज्य गुरुजी की पादपूजा एवं आश्रमस्थ भगवान आदि शंकराचार्यजी का पादुका पूजन का कार्यक्रम होगा। इससे पूर्व पूज्य गुरुजी इच्छुक लोगों को मंत्र-दीक्षा प्रदान करेंगें।

उत्तिष्ठत जाग्रत
प्राप्य वरान् निबोधत
उठो, जागो एवं गुरु को प्राप्त कर
तत्व को जानो

—: शुभ कामनाओं सहित :—

1. Sh. P.H. Shah, Ahmedabad
2. M/S Punit Apparels Pvt. Ltd., Indore
3. M/S Samarpan Engg. & Mkt. Pvt. Ltd., Indore
4. Sh. Chandru Kukreja, Mumbai
5. M/S Pharmalab India Pvt. Ltd., Mumbai
6. M/S Elite Housing Developement Pvt. Ltd., Mumbai

-: वेदान्त पीयूष :-
स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती के लिये, तुलिका प्रिन्टिंग मन्दिर, ३४ ए ग्रीनलेण्ड कॉलोनी, स्नेहनगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 'वेदान्त आश्रम', ई-२६४८.५० सुदामा नगर, इन्दौर से प्रकाशित।
सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती Tel : 0731-2486055, 9302107229 ; E mail- info@vmission.org
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६